देश के लिए लिखें कलम के धनी - हुसैन

राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक सम्मेलन का दूसरा दिन

लाडनूं, 14 अक्टूबर।

प्रख्यात पत्रकार व लेखक डॉ. मुजज्फर हुसैन मुंबई ने कहा है कि युवा लेखकों को यह ध्यान रखना चाहिए कि पत्र-पत्रिकाओं में क्या छपता है, क्योंकि बिना छपे लेखन का महत्व नहीं होता। उन्हें अपने लेखन में वर्तमान दुनिया पर निगाह डालकर अपनी कलम को चलाने उसे छपाने और ज्ञान को बांटने की तिहरी जिम्मेदारी निभानी होती है। वर्तमान समस्याओं के समाधान की दिशा में शब्दों के चयन की दुनिया में और वैश्विक सूचनाओं की दुनिया में अणुव्रत को माध्यम बनाकर सभी कलम के धनी लोगों को लिखना चाहिए तथा देश को समस्या मुक्त करने और समाज में सुधार लाने के लिए कार्य करना चाहिए। उन्होंने जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय स्थित सेमिनार हॉल में आयोजित राष्ट्रीय अणुव्रत लेखक सम्मेलन के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए देश की विभिन्न समस्याओं पर अपने विचार व्यक्त किये एवं युवा पीढी के दिग्भ्रम की स्थिति में अणुव्रत को सुधार की स्थिति में हथियार बनाने की जरूरत बताते हुए कहा कि अरबी भाषा का साम्राज्य खत्म होने के बाद देश में साम्प्रदायिक विवाद समाप्त हो सकते हैं। उन्होंने ईटीटोलॉजी के बारे में बताते हुए कहा कि देवनार के एक कत्लखाने में प्रतिघंटे 24 हजार पशु काटे जाते हैं। यदि देश के सभी कत्लखानों के आंकड़े सामने लाये ंतो वे चौंकाने वाले होंगे। यह वैज्ञानिक तौर पर सिद्ध हो चुका है कि पशु-पक्षियों को चाहे होश में या बेहोश कर काटा जाये उनकी चीख और चीत्कार भूमि में अति गहराई तक समाहित हो जाती है जो छः-सात साल बाद भूकम्प, सुनामी और ज्वालामुखी के रूप में प्रकृति का प्रकोप बनकर बाहर आती है और महाविनाश का कारण बनती हैं। उन्होंने शाकाहार की वकालत की तथा अणुव्रतों के बारे में कहा कि छोटी-छोटी बातें इतना प्रभाव डालती है ि कवह समूचे वातावरण को बदल सकती है। डॉ. सरोजकुमार वर्मा ने वर्तमान युवापीढी का दिग्भ्रम और अणुव्रत का समाधान विषय की प्रस्तावना रखते हुए कहा कि आज का युवा हर दिशा में भटक चुका है चाहे वह शैक्षिक हो, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि कोई भी दिशा हो। उन्होंने दिग्भ्रम की स्थिति को समाप्त करने के लिए बाहरी और बाजारवाद के वातावरण से हटकर अपने आप में स्थित होकर आत्मज्ञान के रास्ते पर जाने को जरूरी बताया तथा जीयो और जीने दो के नारे के अनुरूप परस्पर निर्भरता और सहअस्तित्व के सूत्र को समाधान के रूप में पेश करते हुए कहा कि अणुव्रत ही इसके बोध का मार्ग है। नई दिल्ली से आये लेखक रजनीकांत ने कहा कि केवल युवा ही नहीं सारा समाज ही दिग्भ्रमित है। किसी को वास्तविक मंजिल का पता नहीं है। हमें अपनी दृश्टि में परिवर्तन करना चाहिए तथा दूसरे का सम्मान करना सीखना चाहिए। द्वितीय सत्र का संचालन डॉ. नरेन्द्र शर्मा कुसुम ने किया। इससे पूर्व प्रथम सत्र में महिला सशक्तिकरण की वास्तविकता पर विचार किया गया। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने संबोधन में नारी को संगठित क्षेत्र में काम करने वाली, असंगठित क्षेत्र में काम करने वाली, गृहिणी तथा तथाकथित ि-क्षित आधुनिकायें - इन चार भागों में बांटते हुए कहा कि एक गृहिणी सबसे सशक्त होती है जो भावी संतति, अपने परिवार और समूचे समाज का निर्माण करती है।

उन्होंने नारी सशक्तिकरण को पश्चिम की अवधारणा बताते हुए कहा कि न पुरुश कमजोर है और न महिला कमजोर है तथा न पुरुष सर्वशक्तिमान है और न महिला सर्वशक्तिमान हैं। भारतीय नारी परिवार की धुरी है। शारीरिक संरचना की दृश्टि से महिला पुरुष से अधिक सहनशील और सशक्त होती है। उन्होंने कछुआ, केकड़ा और जटायु वृत्तियों की तुलना करते हुए कहा कि संकट से मुकाबले की बजाय मुंह छिपाने की कछुआ वृत्ति और आगे बढने वाले की टांग खींचने की ईर्ष्यापरक केकड़ावृत्ति की तुलना में अन्याय के विरोध में खड़े होने वाले जटायु की वृत्ति श्रेश्ठ होती है। उन्होंने समाज को दिशा देने के काम में लेखकों, साहित्यकारों और पत्रकारों को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा कि संवेदनाओं के स्रोत को सूखने न दें। भ्रष्टाचार और अनैतिकता को समाप्त करने के लिए भारतीय संस्औति के मूल्यों और चरित्रनिष्ठा को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाना आवश्यक है। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने इस अवसर पर माता को संस्कार निर्माण और सशक्त बताते हुए कहा कि केवल 18वीं और 19वीं शताब्दी में जब समाज व्यवस्था पुरुष केन्द्रित थी तो महिलाओं को दबाया गया और उसका परिणाम है कि 20वीं शताब्दी के बाद महिलायें समानता की बात करने लगी। उन्होंने 21वीं सदी को नारी की सदी बताते हुए कहा कि आज धरती से लेकर आकाश की ऊंचाईयों तक महिलाओं का वर्चस्व है। उन्होंने पत्रकारिता व लेखन में प्रख्यात महिलाओं के नाम गिनाते हुए कहा कि अंग्रेजी का वुमैन शब्द नारी सशक्तिकरण का आधार है। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. समणी मंगलप्रज्ञा ने लेखकों से आह्वान करते हुए कहा कि लेखक की लेखनी में जान होती है और वह लिखकर बहुत कुछ बदल सकता है। उन्होंने ग्रामीण महिला की स्थिति को सामने रखकर ऐसा लेखन करने की सलाह दी कि जिससे भारत देश सशक्त बन सके। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. किरण नाहटा बीकानेर ने महिलाओं को शारीरिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा नैतिक व सांस्कृतिक दृश्टि से महिलाओं को सक्षम बनाने का विवेचन प्रस्तुत किया तथा कहा कि महिला सशक्तिकरण भारतीय चिंतन के बजाय पाश्चात्य देन है। जैन धर्म में तो महिलाओं का बहुत अधिक सम्मान है। कोटा के डॉ. एल.के. दाधीच ने हर उस विचार को स्वागत योग्य बताया जो महिला विकास में सहायक हो। प्रो. औष्णा मनोत जोधपुर ने विषय की प्रस्तुति करते हुए कहा कि एक नारी को सशक्त बनाने से समूचा राष्ट्र सशक्त बन सकता है। उन्होंने महिलाओं के लिए स्वयं परिवार, समाज व देश के सशक्तिकरण की धुरी बताया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शांता जैन ने किया।